कजरी

विश्वासी एक्का

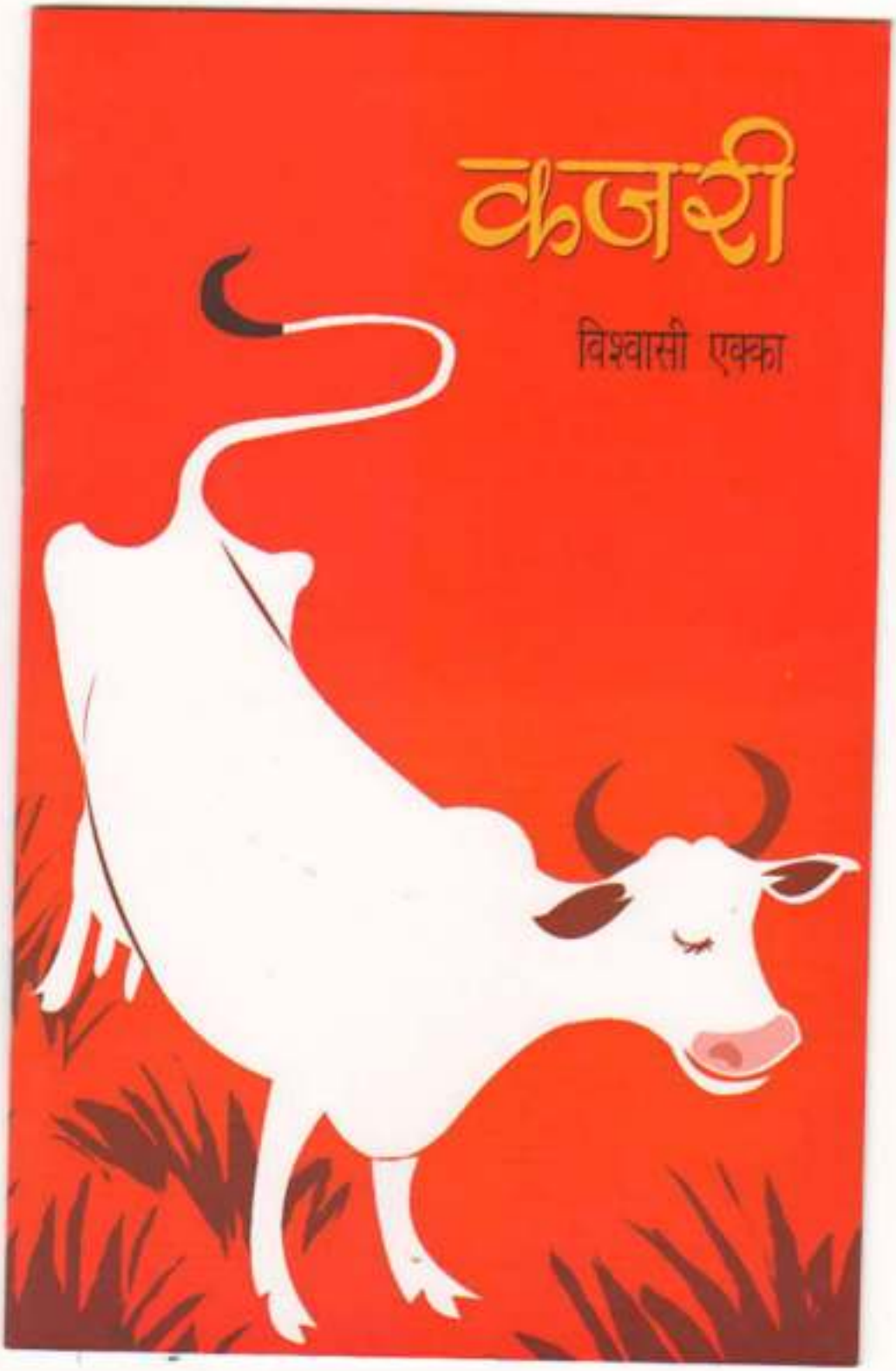

नवसाक्षर साहित्यमाला

कजरी

प्रो. विश्वासी एक्का

चित्रकार
अतुल वर्धन

nbt.india
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

ISBN 978-81-237-8083-2
पहला संस्करण : 2017
पहली आवृत्ति : 2019 *(शक 1941)*
मूल © प्रो. विश्वासी एक्का
Kajri (Original Hindi)
₹ 18.00
निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 द्वारा प्रकाशित
Website: www.nbtindia.gov.in

कजरी आँगन में निढ़ाल पड़ी थी। आँखों से पानी बह रहा था। किसी को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। कजरी अगर बोल सकती तो अपनी पीड़ा कह सुनाती। लालच के मारे सरपंच के बड़े बेटे के विवाह के अवसर पर पॉलिथीन में बाँधकर फेंकी गई पूड़ियाँ कजरी खा गई थी। पूड़ियों के साथ पॉलिथीन भी चबा गई थी वह।

यह बात न तो रामधनी को पता थी और न ही घर के अन्य सदस्यों को। शोर-गुल सुनकर आस-पड़ोस से भी लोग आ गए। उनमें कुछ बच्चे भी थे। सोमारू का बेटा डरते-डरते बोला, "कजरी रोज साहू के होटल के पास कचरे के ढेर में मुँह घुसाकर कुछ खाती रहती है। जानवर में यह समझ कहाँ कि वह अपना भला-बुरा समझ सके। जब आदमी नासमझ हो सकता है तो कजरी तो ठहरी एक गाय।" वह

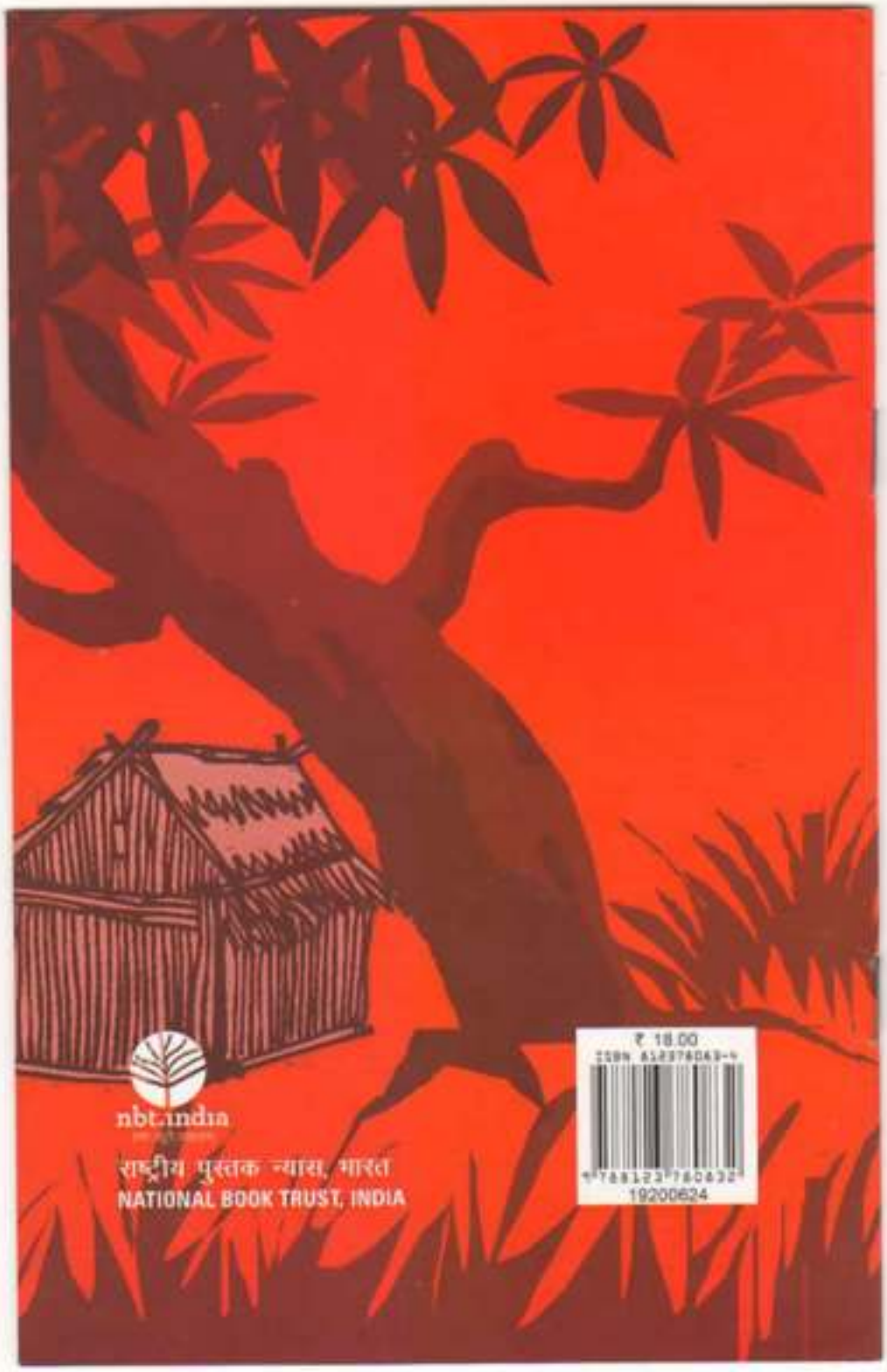
nbt.india
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA
₹ 18.00
19200624